मैथिली कथाक विकासक्रम आ प्रभास कुमार चौधरी

श्यामरूप चौधरी, शोध छात्र
मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

मनुष्य स्वभावसँ चिंतनशील प्राणी अछि। जीव–जगतमे जे कोनो कार्य व्यापार ओकरा दृस्टिपथ पर अबैत अछि तकर प्रभाव ओकर मन–मस्तिष्क पर पड़ैत अछि। काव्यक घनिष्ठ संबंध जीव–जगतसँ अछि। कोनो भावुक आ संवेदनशील सरस हृदयवला काव्यप्रेमी अपन रूचिक अनुकूल कोनो खास साहित्यक विधामे साहित्य सर्जना करैत छथि। गद्य–साहित्यक जतेक विधा अछि ताहिमे कथा सर्वाधिक सशक्त विधा थिक। कथा साहित्य ओतबे पुराण अछि जतबा मनुष्य कियेक तँ ज्ञान आ मनोविनोदक लेल जतेक सुगम कथा अछि ततेक साहित्यक आन विधा नहि। हिन्दी साहित्यकोशमे कथाक विस्तृत व्याख्या दैत कहल गेल अछि– 'कथ' धातुसँ व्युत्पन्न कथा शब्दक साधारण अर्थ अछि 'ओ जे कहल जाय'। कथनमे वक्ताक अतिरिक्त श्रोताक कथन अन्तर्भुक्त अछि कियेक तँ श्रोताक अभावमे एक क्षणक लेल हम बजबाक कल्पना तँ कऽ सकैत छी, कहबाक नहि। परंच ओ सभ किछु जे कहल जाय कथाक नहि कहओत। कथाक विशिष्ट अर्थ भऽ गेल अछि कोनो एहन कथित घटनाक कहब, वर्णन करब जकर निश्चित परिणाम होअय। घटनाक वर्णन सेहो कालानुक्रम आवश्यक अछि, जेना सोमक वाद मंगल, यौवनक बाद वृद्धावस्था, प्राणांतक बाद क्षय अछि– मनुष्य आन जीवधारी, पशु–पक्षी आदि तथा जगतक विविध पदार्थ जकर

अनुभव कयल जा चुकल अछि अथवा जे कल्पित कयल जा सकैत अछि। जाहिसँ संबंधित घअना होअय ओकर कोनो विशेष परिस्थिति अथवा परिस्थितिक निश्चित आदि वा अंतसँ युक्त वर्णन 'कथा' कहबैत अछि।[1]

आधुनिक मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ सामालोचक आचार्य रमानाथ झा कथाक सन्दर्भमे अपन विचार व्यक्त करैत कहने छथि–''कथा साहित्य थीक मनुष्यक वास्तविक जीवनक काल्पनिक चित्रण अर्थात उहिमे मानव जीवनक आनुषंगिक कथा कल्पनाक रंगमे रंगि कैँ गद्यमे व्यक्त कयल जाइत अछि।[2]

कथामे जीवनक कोनो एक पक्षक चित्रण कहैत अछि कथाक वर्ण विषय होइत अछि जीवन–जगतक विविध क्रियाकलाप, आचार–व्यवहार अर्थात जतेक कोनो चिरन्तन सत्य अछि शाश्वत मूल्य अछि, उन्नति, अवनति, मान–अपमान, विरह–मिलन, हर्ष–विषाद, दिन–रात सभहक वर्णन कथामे होइत अछि। मिथिलामे कथाक परम्परा बड़ प्राचीन अछि मुदा कथा एतय लिखबाक नहि अपितु कहबाक परम्परा रहल। मिथिलांचलमे प्रचलित कथा अधिकांश विधि व्यवहारक संग जोड़ल गेल अछि यथा–मधुश्रावणी कथा, वट सावित्री कथा, तुसारी कथा आदि। एकर अतिरिक्त समाजमे बहुतो एहन व्यक्ति छलाह जे नीक कथाकार छलाह। (राजालोकनिक तँ कथाकार लोकनि कैँ नियुक्त कऽ कथा सुनैत छलाह। मैथिली भाषा साहित्यमे कथा लिखबाक परम्परा बीसम शताब्दीक प्रथम दशकसँ प्रारंभ भेल। एहिसँ पूर्व एहि साहित्यमे कथा लिखबाक परम्परा नहि छल। एहि प्रसंग विचार व्यक्त करैत वरेण्य समालोचक आचार्य रमानाथ झा कहैत छथि–''कथा एतए

कहबाक वस्तु बुझल जाइत रहल लिखबाक नहि ओ हमर तँ अनुमान अछि जे एहि रूपेँ कथाकार–लोकनिक संग मैथिलीक सहस्त्रो कथा लुप्त भए गेल। ''[3]

मैथिली कथा साहित्यक आरंभ संस्कृतक प्रसिद्ध कथा सभक अनुवादसँ भेल

अछि। डॉ0 रामदेव झा मैथिली आदि कथा शीर्षक निबंधमे लिखैत छथि–''कथा कोटिक साहित्यक आविर्भाव मौलिक लेखनसँ नहि अनुवादेक प्रभावसँ भेल अछि आ से भेल अछि चन्दा झाक पुरूष परीक्षाक अनुवादक प्रकाशनक पछाति।[4]

मैथिलीमे आख्यायिका, उपाख्यान, नीति कथा इत्यादिक रचना आरंभ भेल जकर आदर्श संस्कृत गद्य–काव्य रहल। उन्नैसम शताब्दीक अंतिम चरणमे कवीश्वर चन्दा झा विद्यापतिकृत पुरूष–परीक्षाक अनुवाद कयलनि। एकर पश्चात 1906 ई० मे म०म० मुरलीधर झाक मित्रलाभ हितोपदेश आ महाभारतक अनुशासनपर्व, 1918 ई० मे बाबू क्षेमधारी सिंहक 'शकुन्तला', 1919 ई० मे उमेश मिश्रक 'नलोपाख्यान' तथा यक्ष–पाण्डव संवाद, पं० त्रिलोचन झाक उद्योग पर्व, गणनाथ झाक आदिपर्वक अनुवादक चर्चा भेटैत अछि। मैथिलीक प्राचीन कथाक स्वरूप ओ विकासक्रम कँ स्पष्ट करैत प्रख्यात विद्वान प्राध्यापक एवं समालोचक डॉ० आनन्द मिश्रक कथन छनि जे ''पंचतंत्र शैली विद्यापतिक पुरूष परीक्षासँ होइत मैथिलीक प्रारंभिक कथा धरि आयल अछि।''[5] एकरा संस्कृत कथा साहित्यक मैथिली कथा साहित्यक विकासमे प्रत्यक्ष प्रभाव मानल जा सकैत अछि। जखन की रामदेब बाबू मैथिली कथाक विकासमे संस्कृत कथा साहित्यक परोक्ष प्रभाव

मानैत छथि आ हिनक मत।छनि जे पंचतंत्र शैलीक रचना मैथिलीमे अनुवादनक प्रकाशन पछाति मैथिलीमे कथालेखनक प्रयास भेल। मैथिलीमे आधुनिक कथा साहित्यक आविर्भाव अंग्रेजीक गद्य विधा short-storyक प्रभावसँ भेल अछि। मुदा प्राचीनता आ आधुनिकताक संगम स्थल पर ठाढ़ 'कविक कवि' उपाधिसँ विभूषित प्रख्यात विद्वान डॉ0 सुरेन्द्र झा 'सुमन' एहि बातसँ असहमति प्रकट करैत छथि। मयानन्द मिश्रक 'भांगक लोटा' कथा संग्रहक भूमिकामे कहैत छथि जे पाश्चात्य साहित्य भारतीय कथा साहित्यकेँ आधुनिक दिशामे मोड़बाक हेतु प्रभाव ओ प्रेरणाक महत्वपूर्ण कारकक रूपमे काज कयलक। हिनका अनुसारेँ–

''भारतीय लोकभाषामे कथा साहित्यक अजस्त्र निर्झर लोकरूचिक विशाल क्षेत्रकेँ पाटि रहल अछि– कहल जाइछ जे तकर स्त्रोत पाश्यचात साहित्य थिकैक। उपन्यास ओ गल्पक छवि– छटा हमरा उद्याचलक अरूण प्रभातसँ नहि, अस्ताचलक श्याम सन्धयासँ भेटल अछि। जीवनक अथसँ इति धरि हरिवंश–पुराण गणेश खण्ड–गरूड़ पुराण अछि, जकर जीवन कथेसँ गढ़ल–मढ़ल छैक, वृहतकथा–कथा–सरितसागरसँ जकर कानन भरल–पूरल छैक, ओहि देशकेँ ई धारण कोना गृहित होऔ ? एतबा अवश्य जे पाश्चात्य साहित्यक सम्पकेँ हमर स्वर्ण–दीप बल्बक बल ललेक अछि हमर शिल्पगृह–शिल्प 'मिल प्रोडक्शनक' रूप धयलक अछि। रूप वैह अछि त्वाचा चिकना गेल अछि। कण्ठ स्वर वैह अछि– गीतक लपटा बदलि गेल अछि।[6]

अधिकांश विद्धानक मत छनि जे मैथिली साहित्यमे मौलिक कथाक विकास अंग्रेजीक गद्य विधा 'short story' क प्रभास भेल अछि। पश्चात अंग्रेजी साहित्यक short story क लेल मैथिली साहित्य मे 'कथा' अर्थ सर्वस्वीकृत भऽ गेल। कथाकार, नाटककार, निबंधकार, सामालोचक डॉ0 रामदेव झाक अनुसार–''काल क्रममे मैथिली साहित्यमे short story क हेतु 'कथा' अर्थ सर्वस्वीकृत भऽ गेल। प्रो0 अमरेन्द पाठक अपन प्रसिद्ध ग्रंथ 'मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन'मे short story क हेतु लघुकथा शब्दक प्रयोग कयने छथि। मुदा शीर्षक 'लघुकथा एवं उपन्यास' मे आगाँ लघुकथाक स्थान पर 'कथा' शब्दक तीन बेर प्रयोग कएलनि अछि तात्पर्य ई जे मैथिली साहित्यमे कथा कहलासँ ओहि साहित्यिक विधाक बोध होइछ जकरा अंग्रेजी साहित्यमे short story कहल जाइछ।

ई साहित्य–अकादेमी द्धारा प्रकाशित मैथिजी कथा शताब्दी संचयन मे सेहो मैथिली कथाकेँ अँग्रेजी साहित्यक विधा short story क पर्याय मानने छथि। द्रष्टव्य थिक निम्न अंश–

''शॉर्ट–स्टोरी' क मैथिली अभिधान देबाक प्रयत्नक क्रममे अनेक शब्दक प्रयोग कयल जाइत रहल अछि। लघुकथा, गल्प कथा, कहानीक प्रयोग अनेक ठाम देखबामे अबैत रहल अछि। 'विभूति' पत्रिका एहि हेतु 'गप्प' शब्दक प्रयोग करैत रहल छल। 'मिथिला मोद' अपन प्रकाशनक दोसर प्रकल्प से सामाजिको कथाकँ प्रचूर परिभागमे स्थान दियऽ लागल आ ओकरा 'गल्प' ओ 'उपाख्यान'

दुनू नामसँ अभिहित करैत छल। मुदा कालक्रमे 'गल्प' ओ 'कथा' मात्र प्रयोगमे रहि गेल अछि। एहूमे आब 'शॉर्ट स्टोरी'क मैथिली पर्याय 'कथा' अर्थ स्वीकृति भऽ गेल अछि। मैथिली मे लिखल 'शॉर्ट स्टोरी' भेल कथा जकर रचयिता भेलाह कथाकार। कथा विधामे कयल गेल समस्त रचनात्मक अवदानक समवायिक रूप भेल मैथिली कथा साहित्य ''[8]

मैथिली भाषा साहित्यमे मौलिक कथाक लेखन बीसम शताब्दीक प्रथम दशकसँ प्रारंभ भेल। मैथिलीक पहिल प्रकाशित मौलिक कथा आ कथाकारक विषयमे मतैक्य नहि अछि। प्रारंभमे मैथिली साहित्यमे कथा आ उपन्यास विधामे कोनो स्पष्ट अंतर नहि छल (1921 ई० मे)। पहिल बेर अनुप मिश्र अपन नारद विवाह काव्यक भूमिकामे कथा आ उपन्यासक अन्तर कैँ स्पष्ट कयलनि। तँ केओ रासविहारी लाल दासक 'सुमति' (1918) कैँ मैथिलीक पहिल कथा मानैत छथि तँ केओ कालिकुमार दासक भीषण अन्याय (1923) कैँ तँ केओ पुलकित मिश्रक मोहिनी–मोहन कैँ। सम्पादक द्वय डॉ0 अमरेश पाठक आ मोहन भारद्वाजक अनुसार– ''काली कुमार दासक 'भीषण अन्याय' (1923) तथा कुमार गंगानन्द सिहंक 'भोल'क छद्मनामसँ लिखल 'मनुष्यक मोल'(1924)कैँ मैथिलीक प्रारंभिक मौलिक कथाक रूप मे लेल जा सकैत अछि। ''[9]

विद्वान प्राध्यापक आ इतिहासकार डॉ0 दिनेश कुमार झाक अनुसार–

''मैथिलीक पहिल कथा कोन अछि तथा ओकर जन्म–तिथि की अछि, एहि सम्बन्ध मतैक्यक अभाव अछि तथापि कालीकुमार दास रचित 'भीषण अन्याय'(1923)कैं प्रथम मौलिक मैथिली कथा मानल जा सकैत अछि।''[10]

प्रख्यात समालोचक, निबंन्धकार, कवि भीमनाथ झाक अनुसार–''

आधुनिक कथाक अट्टालिका जे ठाढ़ भऽ रहल अछि ताहिमे आख्यायिकाक अतिरिक्त श्रीकृष्ण ठाकुरक लिखल 'चन्द्रप्रभा' ओ बाबू तुलापति सिंहक लिखल 'मदनराजचरित' उपन्यास न्योकँ काज भनहि करैत अछि, मुदा देबलाक पहिल दोसर ईट 1923 ई0 मे काली कुमार दासक लिखल 'भीषण अन्याय' तथा 1924मे भोलक छद्मनाम 'भोल'क नामसँ कुमार गंगानन्द सिंहक लिखल 'मनुष्य मोल'कैं मानहि पड़त।''[11]

मैथिली कथा साहित्य पर विशिष्ट आ प्रशंसनीय काज कयनिहार डॉ0 मेघन प्रसाद कहैत छथि– ''कहबाक तात्पर्य ई जे 1921 ई0सँ पूर्व मैथिलीमे लिखत कथामे प्रायः उपन्यास शब्दहिक उपयोग देखल जाइत अछि। एहि तथ्यक आधार पर 1907–08 ई0मे पुस्तकाकार प्रकाशित 'मोहिनी–मोहन'कैं मिथिला भाषाक उपन्यास कहला मात्रसँ कथाक परिधिसँ फराक नहि कयल जा सकैछ। कथाक परिभाषा ओ ओकर विभिन्न तत्वक कसौटी पर कसलाक पश्चात एहि निर्णयपर अयबा लेल बाध्य होमय पड़ैछ जे 'मोहिनी मोहन' कथा थिक ई भिन्न बात थिक जे कालान्तरमे प्रकाशित कथा सभ एहिसँ उत्कृष्ट ओ परिमार्जित कथा छल। किन्तु कथाक घटनाचक्र, घटनाक क्षिप्रुता, औ सुक्य तथा कथातत्व–यथा

जाति पॉजिक अनावश्क महत्व, घटक लोकनिक कौटिल्य, दहेज प्रथा आदि सामाजिक दोषक प्रति कथाकारक संकेत–प्रभृति कतिपय विन्दु अछि जे 'मोहिनी–मोहन'कैं कथा होयबाक स्पष्ट प्रमाण थिक।[12]

डॉ0 रामदेव झाक अनुसार–''जावत धरि एहिसँ पूर्व प्रकाशित कोनो कथा नहि भेटैत अछि। तावत धरि उपलब्ध तथ्य ओ सामग्री आलोकमे जनार्दन झा

'जनसीदन'रचित 'ताराक वैधव्य'(1917)मैथिलीक प्रथम कथा सिद्ध होइत अछि।''[13]

पुनः स्वयं अपन मतक खंडन करैत साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित मैथिली कथा शताब्दी संचयनमे 1906 ई०मे जलधर झा लिखित विलक्षण दाम्पत्यकैं मैथिलीक पहिल प्रकाशित मौलिक कथा माननें छथि।

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कथा' संग्रहक भूमिकामे सेहो पत्रिका 'मैथिल हित साधन'मे प्रकाशित जलधर झाक 'विलक्षण दाम्पत्य'कैं मैथिली प्रथम प्रकाशित मौलिक कथा मानल गेल अछि। एहि तरहेँ स्पष्ट अछि जे मैथिलीक प्रथम प्रकाशित मौलिक कथाक संबंधमे विभिन्न विद्वानक मत ओझरायल जकाँ अछि। मैथिली कथाक विकास यात्रा एक शताब्दीसँ एक दसक बेसीक अछि। कथा आजुक सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यक विधा थिक। एहि अवधिमे मैथिली साहित्यमे बहुत बेसी भाषामे कथा लिखल गेल जाहिमे किछु बेसी चर्चित तँ किछु एहनो कथा लिखल गेल जे चर्चित नहि भऽ

सकल। एहि पैघ अवधिक कथाक विकासक लेखा–जोखा प्रस्तुत करब जँ बड़ दुस्कर कार्य नहि अछि तँ बहुत असानो नहि अछि। अध्यापक सुविधाक दृष्टियेँ हम मैथिली कथाकेँ दशकमे बाँटि एकर विकासक लेखा–जोखा प्रस्तुत करबाक प्रयास कऽ रहल छी।

डॉ० मेघन प्रसाद अपन पोथी मैथिली कथा–कोशमे जे सूची बनौने छथि ओहिमे बीसम शताब्दीक पहिल दशसकमे प्रकाशित कथाक संख्या तीन (3) अछि। एहि मध्य नव अनुसंधानमे अत्यन्त जलधर झाक कथा केँ जोड़ि देल जाय तँ प्रकाशित कथाक संख्या चारि 4 होइ अछि।

मैथिलीक प्रारंभिक कथा सभमे लेखकक सुधारवादी दृष्टिकोण नजरि अबैत अछि– आ कथा सभक मुख्य स्वर सामाजिक कुरितिक परिहार छल। प्रारंभिक कथा सभमे कथावस्तु विशेषता रहल धटना वा चरित्रक नहि। कथावस्तु मुल आधार समस्या छल। मिथिलामे रूढ़िवादिता आ अंधविश्वासक कारणे किछु कुसंस्कार सभ जड़ियाल छल। सामाजिक कुरितिक सुत्रधार छलाह समाजक उच्चवर्ग आ प्रबुद्ध वर्ग। युग सामंतवादी छल। मिथिलेश जे महाराजा छलाह सामाजिक विकास करबाक लक्ष्यकेँ ध्यानमे राखि 1910 ई०मे मैथिलीक महासभाक स्थापना कयलनि। महासभाक पहिल अधिवेशनमे नौ सूत्री कार्यक्रम पारित भेल। प्रथम सूत्र राजभक्ति छल आ शेष सूत्र सभ सुधारवादी। चारिम सूत्र छल सामाजिक कुरितिक परिहार आ सभसँ ज्वलन्त समस्या छल वैवाहिक कुरीति। विद्वान प्राध्यापक आ इतिहासकारक डॉ० दिनेश कुमार झाक अनुसार –''मिथिलाक दुर्दशा सुधार एवं देशोन्नोतिक भावनासँ परिचालित ई महासभा

नओटा प्रस्ताव पारित कयने छल जे नव सूत्री योजनाक नाम सँ प्रसिद्ध अछि। ई नव प्रस्ताव राजभक्ति, सदाचार प्रसार, विद्योन्नति, समाजिक कुरीतिक परिहार, उचित व्यय, परस्पर विरोध परिहार, कृषि वाणिज्य उन्नति, मिथिला मैथिल हित साधन एवं मैथिलिक स्वत्वक रक्षा आदि विषयसँ सम्बद्ध छल किन्तु एहि नवसूत्री योजनाक मात्र कुरीति परिहार आओर ताहुमे वैवाहिक कुरीति मात्र कथाकार लोकनिक ध्यानकेँ मुख्य रूपसँ आकृष्ट कयलक।[14]

आजुक कथा वैशिष्ट पर प्रकाश दैत डॉ0 देवकान्त झा कहैत छथि– ''आजुक कथाक क्षितिज विराट आ बहुआयामी अछि। कथामे विषय–वैविध्य, कथ्यमे प्रभविष्णुता, शिल्पमे प्रयोगधर्मिता, परिवेशमे विश्वसनीयता ओ चित्रमयता, चित्रणमे सजीवता, अनुभूतिमे संवेदनशीलता, अभिव्यक्तिमे सहजता, दृष्टिमे वैज्ञानिकता ओ मैलिकता तथा दिशामे सुनिश्चिता एवं रचनात्मकता एखनुक कथा साहित्यक केन्द्रीय विशेषता थिक। तिक्ख यथार्थ, रूक्ख सत्य,टुटैत मूल्य, बिखरैत लोक, ढ़हैत संस्कृति, बदलैत सभ्यता, ढ़नमनाइत व्यवस्था ओ अन्तहीन पथपर दिशाहीन लोकक मुक्तिकामना आ जीविकाक सशक्त अभिव्यक्ति थिक आजुक कथा।''[15]

भूमंडलीकरण आ अद्योगीकरणक कारणें समाजमे बहुत तेजीसँ परिवर्त्तन भेल अछि। पारिवारिक संबंध समाप्त भऽ रहल अछि। समलैंगताक बिहाड़ि विश्व भरिमे एकटा बड़का विवादक आइ विश्व अछि। समाजमे पुरूष वेश्यावृतिक प्रचलन बढ़ल अछि। अभावमे नहियो रहला पर कतेको महिला मात्र मैज–मस्तीक लेल आन पुरूषसँ संबंध राखि रहल छथि। विश्वक आन भाषा

साहित्यमे एकर चित्रण भऽ रहल अछि मुदा मैथिली कथा सभमे एहि विसंगतिक सभ्यक चित्रणक अभाव जकाँ अछि। मैथिली कथाकार आ विद्वान लोकनि एहि बातसँ सहमत छथि। डॉ0 अशोक कुमार मेहता कहैत छथि–''भूमंडलीकरणक प्रभावसँ भारतीय साहित्यमे सेहो एकटा नव प्रवृत्तिक उदय भेल अछि जकरा 'बाजारवादी प्रवृत्तिक' नाम देल जा सकैछ। सदासँ अनुकरणगामी मैथिली साहित्यमे ई प्रवृति एखन वाल्यावस्था वा कही तँ जन्मौटी बच्चा जकाँ अछि।[16]

वर्त्तमान समयमे मैथिली कथा साहित्य परिमाणात्मक आ गुणात्मक दुनू दृष्टियेँ अत्यन्त समृद्ध अछि आ वर्त्तमान कथाकार लोकनिक प्रयास एहि दशामे स्तुत्य अछि। मैथिली कथाक विकासक्रम आ प्रभास कुमार चौधरी एवं मैथिली कथाक प्रारंभ आ विकासक्रमकेँ दशकमे बाटि देखयबाक प्रयास कयने छी। संगहि बीसम शताब्दीक छठम सातम दशक जाहि कालमे प्रभास कुमार चौधरी आ गंगेश गुंजनक कथाक क्षेत्रमे प्रवेश भेल विस्तृत विश्लेषण करबाक प्रयास कयने छी। हमर प्रयास रहल अछि प्रत्येक दशकक प्रमुख कथाकार, कथाक किछु विशेषता किछु कथा आ कथा संग्रहक उल्लेख कऽ सकी । मैथिली कथा साहित्यक विकासक अवधि एक शदीसँ एक दशक अवधिमे बीस हजारसँ उपर कथा, तीन सयसँ बेसी कथा–संग्रह जाहिमे सम्पादित कथा संग्रहक संख्या जे सयसँ कम नहि अछि प्रकाशित भेल अछि। कथा सभसँ समृद्ध आ सशक्त विधा थिक।

****

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. हिन्दी साहित्य कोष–सम्पादक–धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ संख्या–158

2. बिडम्बना–भूमिका,उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'पृ0सं0–06

3. कथा–संग्रह– सम्पादक अमरेश पाठक,भूमिका

4. आलोचना(पत्रिका)– सम्पादक मोहन भारद्वाज

5. अखियासल–सम्पादक –रमानन्द झा 'रमण' पृ0–2

6. उधृत, विन्दु विसर्ग, पृ0– 208

7. मैथिली गद्य साहित्य प्रकाशक,7जुलाई,1996 पृ0सं0–54

8. मैथिली कथा यात्राः शताब्दी आयाम,साहित्य अकादमी,पृ0सं0–9

9. कथा–संग्रह– सम्पादक अमरेश पाठक,पृ0सं0–ग

10.मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास– डॉ0 दिनेश कुमार झा, पृ0सं0–138

11. मैथिली कथाक विकास– सम्पादक वासुकीनाथ झा,पृ0सं0–162–163

12. मैथिली कथा–कोश– डॉ0 मेघन प्रसाद ,पृ0स0–4–5

13. मैथिली कथाक विकास– सम्पादक वासुकीनाथ झा, पृं0सं0–31

14. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास– डॉ0 दिनेश कुमार झा, पृ0सं0–140

15. कथा संग्रह– सं.द्वय डॉ०अमरेश पाठक,मोहन भारद्वाज, पुनर्प्रकाशिकी

16. समकालीन मैथिली कथा साहित्य– सम्पादक कलानाथ मिश्र, पृष्ठ संख्या– 95

****